8209837844

www.ugc-net.com

UGC NTA NET (हिन्दी साहित्य)

साहित्यशास्त्र (वक्रोक्ति सिद्धांत)

ईकाई-3 भाग-8

By Jyoti
(Hindi Educator)

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

1 5 K Sub

YouTube

2000 users

UGC-NET 2022

09:00 AM
Current GK

11:00 AM
1st Paper

02:00 PM
1st Paper

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

09:00 PM
Management

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC-NET 2022

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

04:00 PM
Political sciences

06:00 PM
Sanskrti

08:00 PM
Computer Sce.

09:00 PM
Management

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

हिन्दी सिलेबस

इकाई – III

साहित्यशास्त्र

काव्य के लक्षण, काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन।
प्रमुख संप्रदाय और सिद्धान्त – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य।
रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।
शब्दशक्ति, काव्यगुण, काव्य दोष
प्लेटो के काव्य सिद्धान्त।
अरस्तू : अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन, विरेचन सिद्धान्त।
वड्र्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त।
कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी।
टी.एस.इलिएट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, परम्परा की अवधारणा।
आई.ए.रिचड्र्स : मूल्य सिद्धान्त, संप्रेषण सिद्धान्त तथा काव्य-भाषा सिद्धान्त। रूसी रुपवाद।
नयी समीक्षा। मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब।

8209837844 www.ugc-net.com

पाठ्यक्रम

1. वक्रोक्ति अर्थ
2. वक्रोक्ति सिद्धांत
3. वक्रोक्ति का इतिहास अथवा कुंतक-पूर्व वक्रोक्ति की अवधारणा
4. कुतक का वक्रोक्ति सिद्धांत
5. वक्रोक्ति के भेद / प्रकार
6. अभिव्यंजनावाद और वक्रोक्तिवाद

8209837844

www.ugc-net.com

वक्रोक्ति सिद्धांत
(Vakrokti Siddhant)

8209837844

www.ugc-net.com

वक्रोक्ति सिद्धांत

वक्रोक्ति : अर्थ एवं परिभाषा:- वक्रोक्ति दो शब्दों 'वक्र' और 'उक्ति' की संधि से निर्मित शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है- ऐसी उक्ति जो सामान्य से अलग हो। टेढा कथन अर्थात जिसमें लक्षणा शब्द शक्ति हो। भामह ने वक्रोक्ति को एक अलंकार माना था।

वक्रोक्ति सिद्धांत (Vakrokti Siddhant) भारतीय काव्यशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धाँत है | वक्रोक्ति सिद्धांत के प्रवर्त्तक आचार्य कुंतक थे | आचार्य कुंतक से पहले के आचार्य वक्रोक्ति को अलंकार मात्र मानते थे परन्तु आचार्य कुंतक ने वक्रोक्ति को विशेष महत्त्व प्रदान किया | कुंतक ने वक्रोक्ति को काव्य के सौंदर्य का आधार मानते हुए इसे काव्य की आत्मा घोषित किया

8209837844 www.ugc-net.com

वक्रोक्ति का इतिहास अथवा कुंतक-पूर्व वक्रोक्ति की अवधारणा

(1) भामह: अलंकरवादी आचार्य थे | उन्होंने अपनी रचना 'काव्यालंकार' में वक्रोक्ति को सभी अलंकारों का मूल कहा है | भामह वक्रोक्ति को परिभाषित करते हुए कहते हैं —"लोकातिक्रांतगोचरं वचनम् |"अर्थात् लोक की सामान्य कथन प्रणाली से भिन्न वक्रोक्ति है | उनका मानना था कि वक्रोक्ति के अभाव में किसी भी अलंकार का प्रयोग संभव नहीं | वे तो यहाँ तक मानते थे कि वक्रोक्ति के बिना काव्य-रचना ही संभव नहीं |

(2) दण्डीआचार्य दंडी ने अपनी रचना 'काव्यादर्श' में वक्रोक्ति के रूप को और अधिक स्पष्ट किया | उन्होंने संपूर्ण वांग्मय को दो रूपों में विभाजित किया – स्वभावोक्ति और वक्रोक्ति | उनके अनुसार स्वाभावोक्ति में अलंकरण नहीं होता | इसमें किसी वस्तु का साक्षात रूप वर्णन होता है | जबकि वक्रोक्ति में किसी वस्तु का चमत्कार पूर्ण वर्णन किया जाता है |

आचार्य दंडी वक्रोक्ति की परिभाषा देते हुए कहते हैं —"वक्रीकृता उक्ति: अर्थात् वाणी का चातुर्य ही वक्रोक्ति है |"

8209837844 www.ugc-net.com

(3) वामनवामन मूलत: रीतिवादी आचार्य थे | उनकी रचना का नाम है – काव्यालंकार सूत्रवृत्ति | उन्होंने वक्रोक्ति को परिभाषित करते हुए कहा — "सादृश्याल्लक्षणा वक्रोक्ति" अर्थात् सादृश्य निबंधना लक्षणा ही वक्रोक्ति ह

(4) रुद्रटआचार्य रुद्रट ने भी वक्रोक्ति को केवल अलंकार माना लेकिन उन्होंने रीतिवादी आचार्य वामन के विपरीत इसे शब्दालंकार माना | आचार्य रूद्र ने वक्रोक्ति के दो भेद माने – काकु वक्रोक्ति तथा श्लेष वक्रोक्ति

(5) आचार्य आनंदवर्धनआनंदवर्धन ध्वनिवादी आचार्य हैं | इनकी रचना है – ध्वन्यालोक |इन्होंने वक्रोक्ति को अतिशयोक्ति का पर्याय कहा और इसे अलंकारों का मूल घोषित किया |इन्होंने कवि-प्रतिभा तथा विषयवस्तु को वक्रोक्ति चमत्कार का कारण माना है

8209837844 www.ugc-net.com

(6) आचार्य अभिनवगुप्तआचार्य अभिनवगुप्त ने वक्रोक्ति का अर्थ 'उत्कृष्ट पद रचना' माना है | उन्होंने सभी अलंकारों को वक्रोक्ति के अंतर्गत समाहित कर दिया |

(7) भोजआचार्य भोज ने समूचे वांग्मय को तीन भागों में बांटा – वक्रोक्ति, रसोक्ति तथा स्वभावोक्ति |उनके अनुसार उपमा आदि अलंकारों की प्रधानता होने पर वक्रोक्ति होती है | माधुर्य आदि गुणों की प्रधानता होने पर रसोक्ति तथा भाव की प्रधानता होने से स्वाभावोक्ति होती है |

(8) आचार्य मम्मटआचार्य मम्मट एक रसवादी-ध्वनिवादी आचार्य थे | उन्होंने वक्रोक्ति को एक सामान्य अलंकार माना | आगे चलकर रुय्यक तथा अन्य आचार्यों ने भी वक्रोक्ति को मात्र शब्दालंकार घोषित किया

8209837844 www.ugc-net.com

आचार्य कुंतक का वक्रोक्ति सिद्धांत

वक्रोक्ति सिद्धांत के प्रतिपादक आचार्य कुंतक (नौंवी सदी) हैं | उन्होंने अपने ग्रंथ 'वक्रोक्ति जीवितम' में इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया | उन्होंने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा कहा |आचार्य कुंतक ने वक्रोक्ति की परिभाषा देते हुए कहा —"प्रसिद्ध कथन से भिन्न विचित्र वर्णन शैली वक्रोक्ति है |" वे 'विचित्र' का अर्थ 'वैदग्ध्यजन्य चारुता' से लेते हैं | 'वैदग्ध्य' से कुंतक का अभिप्राय 'कवि कर्म कौशल' है

"वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभंगीभणितिरुच्यते"

(1) वक्रोक्ति भाषा-शास्त्र तथा लोक-व्यवहार में प्रचलित शब्दार्थ से भिन्न होती है |
(2) वक्रोक्ति कवि प्रतिभाजन्य चमत्कार से विलक्षणता प्राप्त करती है |
(3) वक्रोक्ति कवि व्यवहार से संबद्ध है |
(4) वक्रोक्ति सहृदय के हृदय में आनंद उत्पन्न करने की क्षमता रखती है |

8209837844

www.ugc-net.com

वक्रोक्ति के भेद / प्रकार

(1) वर्ण-विन्यास वक्रताकुंतक के अनुसार जिस पद्य-पंक्ति में एक-दो या बहुत से वर्ण थोड़े-थोड़े अंतर से बार-बार उसी रूप में व्यवस्थित हों, उसे वर्ण विन्यास वक्रता कहते हैं | यह वर्ण विन्यास वक्रता सभी शब्दालंकारों अनुप्रास, यमक आदि में देखी जा सकती है |

(2) पद-पूर्वार्द्ध वक्रता

वर्णों के समुच्चय का नाम पद है | वर्ण के बाद पद ही काव्य का दूसरा अवयव है | कुंतक ने इसके दो भेद बताए हैं – पूर्वार्द्ध और परार्द्ध |सुबन्त पद के पूर्वार्द्ध प्रातिपादिक रूप तथा तिगंत के पूर्वार्द्ध धातु रूप के विचित्र रूप का नाम पद-पूर्वार्द्ध वक्रता है |पद-पूर्वार्द्ध वक्रता के आठ भेद हैं —

(क) रूढ़ि वैचित्र्य वक्रता
(ख) पर्याय वक्रता
(ग) उपचार वक्रता
(घ) विशेषण वक्रता
(ङ) संवृति वक्रता
(च) वृत्ति वक्रता
(छ) लिंगवैचित्र्य वक्रता
(ज) क्रियावैचित्र्य वक्रता

(3) पद-परार्द्ध वक्रताइस प्रकार की वक्रता में पद के उत्तरार्ध में विचित्रताओं का संकेत रहता है | आचार्य कुंतक ने इसके भी छह भेद माने हैं —

(क) काल वैचित्र्य वक्रता
(ख) कारक वक्रता
(ग) वचन वक्रता
(घ) पुरुष वक्रता
(ङ) उपग्रह वक्रता
(च) प्रत्यय वक्रता

(4) वाक्य वक्रता - अनेक पदों का समूह वाक्य है वाक्य में होने वाली वक्रता के विधान को वाक्य वक्रता कहा गया है | इसके अंतर्गत सुंदर, उदार, वर्णय वस्तु का रमणीय वर्णन रहता है | यह वक्रता कवि प्रतिभा पर आश्रित है | इसके अंतर्गत कुंतक ने प्रायः अलंकारों का विवेचन किया है | अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं —"वाक्य वक्रता के अंतर्गत सुंदर वस्तु का उत्कर्षपूर्ण रमणीय वर्णन होता है |"आचार्य कुंतक ने वाक्य वक्रता सहज और आहार्य के आधार पर दो प्रकार की मानी है | सहज का अर्थ है – स्वाभाविक | इसमें कवि अपनी सहज प्रतिभा द्वारा वस्तुओं का वर्णन करके सहृदयों को आनंदित करता है | आहार्य का अर्थ है – निपुणता | इसमें कवि आकर्षणहीन वस्तुओं को भी अपनी प्रतिभा द्वारा अतिरंजित करके विचित्र वर्णन करता है | ऐसा कवि अपनी काव्य निपुणता के कारण कर पाता है लेकिन यह सब विचित्र लगता है, स्वाभाविक नहीं |

(5) प्रकरण वक्रताप्रकरण का अर्थ है – प्रसंग | प्रबंध काव्य में अनेक प्रसंग आते हैं | इन प्रसंगों के औचित्य को प्रभावशाली बनाना ही प्रबंध वक्रता कहलाता है | आचार्य कुंतक ने इसके आठ भेद बताए हैं —

(क) भावपूर्ण स्थिति की उद्भावना के द्वारा पात्रों के चरित्र का उत्कर्ष करना |

(ख) किसी काव्य प्रसंग में मौलिक कल्पना का प्रयोग करना |

(ग) ऐतिहासिक तथ्य की उपेक्षा करके उसमें चमत्कार का समावेश करना |

(घ) सामान्य विषय-वस्तु का अतिरंजित और विस्तृत वर्णन करना |

(ङ) मुख्य प्रयोजन को पूरा करने के लिए गौण प्रसंग की योजना करना |

(च) किसी कथावस्तु के स्थल विशेष में प्रसंग विशेष द्वारा सौंदर्य

(6) प्रबंध वक्रताआचार्य कुंतक प्रबंध वक्रता के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि सभी प्रकार के सौकुमार्य और वक्रता का अभिधान करना ही प्रबंध वक्रता है | आचार्य कुंतक ने इसके छह भेद माने हैं –
(क) मूल रस परिवर्तन,
(ख) नायक के चरित्र का उत्कर्ष करने वाली घटना का उपसंहार,
(ग) कथा के मध्य में अन्य कार्य द्वारा प्रधान कार्य सिद्धि
(घ) नायक द्वारा अनेक फलों की प्राप्ति,
(ङ) प्रधान कथा का द्योतक नाम,
(च) उद्देश्य या तात्पर्य की विचित्रता

8209837844

www.ugc-net.com

अभिव्यंजनावाद और वक्रोक्तिवाद

हिन्दी में क्रोचे के सिद्धान्त को लेकर काफी भ्रम फैला है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अभिव्यंजना को 'भारतीय वक्रोक्तिवाद का विलायती उत्थान' कहकर उसे 'वाग्वैचित्र्यवाद' की संज्ञा दी। शुक्ल जी के इस कथन के बाद से आचार्य कुन्तक के वक्रोक्तिवाद के साथ क्रोचे के अभिव्यंजनावाद की तुलना करने की परम्परा चल पड़ी है। किन्तु यह उचित प्रतीत नहीं होता। वस्तुतः क्रोचे के अभिव्यंजनावाद में उक्ति वैचित्र्य नहीं है, इसे वक्रोक्तिवाद कहना भी गलत है।

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com